ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 156-159**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

युवाओं में परंपरागत मूल्यों के विघटन का समाजशास्त्रीय अध्ययन

अंजय कुमार मिश्रा
प्रो0 इला साह
1. शोध अध्येता 2. शोध निर्देशिका–समाजशास्त्र विभाग, सोबन सिंह जीना परिसर अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) भारत

Received-05.03.2025, Revised-12.03.2025 Accepted-20.03.2025 **E-mail : k96anjay@gmail.com**

सारांशः प्रत्येक समाज अतीत एवं वर्तमान से जुड़ा होता है। दोनों के दर्शन व आधार में भिन्नता होती है और किसी संस्था, समूह, संगठन, संरचना, व संबंधों का अतीत ही वर्तमान को समझने में सहायक होता है। परिवर्तन निरंतर चलने वाली एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है। विभिन्न समाजों में इसकी गति अलग–अलग होने पर भी यह सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। परिवर्तन की इस प्रक्रिया को आसानी से देखा जा सकता है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, पाश्चात्यीकरण, आधुनिकता सभी के कारण परंपरागत मूल्यों का अस्तित्व कम होता जा रहा है।

भारत को सर्वाधिक युवा देश होने का गौरव प्राप्त है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा है कि 'युवावस्था सबसे अहम् कालखण्ड होता है'। फौलादी जिगर, दृढ़ इच्छा शक्ति, नया करने की चाह, उत्साह, उमंग, स्फूर्ति, सक्रियता, बदलाव, भिन्नता आदि सभी गुण इनमें विद्यमान होते हैं। इसीलिए परिवर्तन की क्षमता भी इनमें सर्वाधिक देखी जाती है और इसी कारण उनमें परंपरागत प्रचलित मूल्यों के प्रति वर्तमान में उदासीनता पायी जाती है या ये कहा जाय कि युवाओं में मूल्यों का विघटन हो रहा है।

कुंजीभूत शब्द– परंपरागत मूल्य, औद्योगीकरण, नगरीकरण, पाश्चात्यीकरण, आधुनिकता, फौलादी जिगर, दृढ़ इच्छा शक्ति,

प्रस्तुत शोधपत्र विघटित होते परंपरागत मूल्यों के अध्ययन पर आधारित है जिसके लिए परिसर अल्मोड़ा के स्व–वित्तपोषित पाठ्यक्रम में अध्ययनरत युवाओं का चयन किया गया है। मूल्य अच्छे व समाजपयोगी कार्यों की अवधारणा से संबंधित है जिसमें व्यक्तित्व विकास के साथ–साथ पारिवारिक, सामाजिक, देश व राष्ट्रहित की भावना निहित होती हैं। इसकी जड़ें बहुत गहरी, वास्तविकता व सामूहिक लाभ से संबंधित होती है। ''मूल्य 'जो होना चाहिए' से संबंधित एक विचार है जो हमारे विभिन्न प्रकार के व्यवहारों को प्रभावित करता है। मूल्य व्यक्ति के व्यक्तित्व और सामाजिक व्यवस्था के साथ अत्यंत गहराई से जुड़ा होता है। ये जीवन के उद्देश्यों और उन्हें प्राप्त करने के साधनों को स्पष्ट करता है। हमारी सभी सामाजिक गतिविधियाँ मूल्यों से जुड़ी होती है।''1प्रत्येक समाज के कुछ निश्चित मानदण्ड होते है जिन्हें समाज की स्वीकृति होती है और ये औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों प्रकार के होते हैं। इनमें परिवर्तन प्रक्रिया जटिल होती है, इनका संबंध सामाजिक नैतिकता से होता है जो व्यक्तियों को सही व गलत आचरण को समझाते हुए कार्य करने या न करने का निर्देश देता है। इसलिए मूल्य और मानदण्ड घनिष्ठ रूप से संबंधित होते है। जॉनसन के अनुसार ''हमारी समस्त सामाजिक गतिविधियाँ मूल्यों से जुड़ी होती है। समाजशास्त्र में मूल्य एक प्रकार का मानदण्ड है पर साधारण मानदण्ड को हम मूल्य नहीं कह सकते।''[2]

युवावस्था अत्यन्त नाजुक व संवेदनशील अवस्था होती है। स्वयं को महत्वपूर्ण समझना, भिन्नता, परिवर्तन, स्वयं की पहचान बनाना, प्रेम, घृणा के प्रति तीव्र प्रतिक्रिया युवा आयु की विशेषता है। अर्थात् इस अवस्था में युवा स्वयं को किशोर मानना बन्द कर देता है और स्वयं की प्रस्थिति के अनुरूप सामाजिक प्रकार्यों व भूमिकाओं का निर्वहन करने लगता है।

प्रत्येक समाज अतीत एवं वर्तमान से जुड़ा होता है। दोनों चिंतन एवं दर्शन के आधार पर भिन्नता लिए हुए होते हैं। किसी भी समूह, संस्था, संगठन, संरचना व संबंधों का अतीत ही वर्तमान को समझने का परिप्रेक्ष्य होता है। भारतीय समाज का अतीत भी लम्बे चिंतन से जुड़ा हुआ है जिसमें प्रथा, परंपरा व मूल्यों का आधार वेद, उपनिषद, महाभारत, गीता, रामायण, धर्मसूत्र, गृहसूत्रों आदि की रचना पर केन्द्रित है जिसमें मानव जीवन व समाज को नियंत्रित रखने का गुण विद्यमान होता है।प्राचीन कालीन मानव जीवन कुछ आधारभूत सिद्धांतों व नियमों से बंधा होता था। आश्रम व्यवस्था ने जीवन विषयक धारणा को विकसित किया और व्यक्तियों को उनके लक्ष्य तक पहुंचने के मूल्यों को ग्रहण करने की सीख दी। सामूहिकता संबंधी मूल्यों से संयुक्त परिवारों की स्थिरता के प्रभाव मिलते हैं। यहां व्यक्तिगत स्वंतत्रता अस्तित्वहीन थी अर्थात् परिवार ही व्यक्ति की पहचान थी। प्रेम, सौहार्द्र, स्थायित्व, सहयोग, भावनात्मक लगाव जैसे मूल्य स्थापित थे। घर–परिवार से प्राप्त संस्कार परिवार और समाज में संगठन बनाए रखते थे। आज्ञापालन, शिष्टाचार, सादाजीवन, उच्च विचार जैसे विचारयुक्त महान तपस्वियों की कहानियां व्यक्तित्व निर्माण में सकारात्मक मूल्यों को दर्शाती हैं।

परिवर्तन और विकास मानवीय समाज में निरंतर चलने वाली एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है। इसकी गति प्रत्येक समाज में अलग–अलग दिखायी पड़ती है। भारतीय समाज में इसकी गति धीमी अवश्य है लेकिन प्रत्येक धर्म, जाति, संस्कृति में यह अवश्य दृष्टिगत होती है। आधुनिक युग में मूल्यों में परिवर्तन भी एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। इन मूल्यों के स्थान पर नवीन मूल्यों का उदय हुआ है और इस प्रक्रिया को आज की युवा पीढ़ी में सर्वाधिक देखा जा रहा है जिनमें पारिवारिक, सामुदायिक भावनाओं की अपेक्षा वैयक्तिक भावनाएं अधिक विकसित हुई हैं। अपने स्वतंत्र अस्तित्व को महत्वपूर्ण मानने के कारण उन्हें प्रचलित प्राचीन एवं परंपरागत मूल्यों से जुड़ाव कम दिखाई पड़ता है। परिवार की चिंता से अधिक आज उनका विश्वास स्वयं के कैरियर व जीवन का आनंद लेने पर केंद्रित है। इन्हीं कारणों से भारत जैसे संप्रभु देशों में तीव्रता से वृद्धाश्रम, क्रेचों आदि में बढ़ोतरी हुई है।मीडिया के प्रभाव से युवा पीढी गुमराह हो रही है। वह आत्म–प्रदर्शन पर विश्वास करती है। समय का अभाव, भावनात्मक बिखराव, पढ़ाई व नौकरी के बदलते प्रतिमानों ने गरुओं व परिवारजन के प्रति सम्मान में कमी को जन्म दिया है। आपराधिक गतिविधियों में तीव्रता के कारण नशा, भ्रष्टाचार, अनैतिक गतिविधियों जैसे अनेक समस्याओं में युवाओं को लिप्त देखा जा रहा है। आहार, मनोरंजन के साधन, रहन–सहन, खान–पान, वेशभूषा आदि सभी में आधुनिकता की झलक दिखाई पड़ती है। कहने का तात्पर्य है कि वर्तमान में युवाओं में प्रचलित परंपरागत मूल्यों के प्रति अलगाव दिखाई पड़ता है। अतः सत्य है कि मूल्यों की अवहेलना ही मूल्यों के विघटन का कारण है।

साहित्यिक पुनरावलोकन– समय समय पर विभिन्न विद्वानों द्वारा युवाओं में घटते परंपरागत मूल्यों के कारणों एवं परिणामों को दर्शाने का प्रयास किया जाता रहा है। गुरूदेव सिंह(1995) ने अपने अध्ययन Impact of Modernization in Modern India में बताया कि आधुनिकीकरण ने समाज में सामाजिक गतिशीलता को बढ़ाया है लेकिन इसने पारिवारिक संरचनाओं और सामाजिक बंधनों को भी कमजोर किया है।[3] श्रीनिवास(1996) के अनुसार, यद्यपि समाज आधुनिकता की ओर बढ़ रहा है लेकिन जातीय पहचान और पारंपरिक

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

मूल्य अभी भी समाज में महत्वपूर्ण है।4 कलामणी(1999) ने अपने अध्ययन के आधार पर स्पष्ट किया कि यद्यपि किशोरों में राजनीतिक एवं धार्मिक मूल्य कम हैं लेकिन सामाजिक मूल्य उच्च हैं।5वहीं डॉ0 के0 ए0 सिंह(2020) ने अपने शोधपत्र क्पउपदपींपदह व िडवतंस टंसनमे ।उवदह प्दकपंद ल्वनजी मे बताया कि युवा असामाजिक गतिविधियों जैसे धुम्रपान, नशे की लत, कक्षा में अनुशासनहीनता, घरेलू विवाद और किशोर अपराध में संलिप्त हो रहे हैं। वे परंपराओं को पुराना मानकर उन्हें नजरअंदाज कर रहे हैं जिससे नैतिकता का पतन हो रहा है।[6]

अध्ययन का उद्देश्य–प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य जनपद अल्मोड़ा में स्थापित सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के परिसर अल्मोड़ा के स्व–वित्तपोषित बी0सी0ए0पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् युवाओं हो रहे परंपरागत मूल्यों के विघटन को दर्शाना है।

शोध अभिकल्प एवं पद्यतिशास्त्र– प्रस्तुत शोधपत्र में अंवेषणात्मक एवं वर्णनात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है। सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय में विज्ञान संकाय के अंतर्गत निर्मित स्व–वित्तपोषित बी0सी0ए0 पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् युवा छात्रों को लिया गया है जिनकी कुल संख्या 353है, क्योंकि यहाँ तुलनात्मक रूप से छात्रों की संख्या 289 अर्थात सर्वाधिक है। अतः अध्ययन में युवा के रूप में केवल छात्रों को सम्मिलित किया गया है।शोधपत्र की वैज्ञानिकता व पारदर्शिता को ध्यान में रखते हुए उक्त संख्या के 15 प्रतिशत युवाओंको दैव निदर्शन की लॉटरी पद्वति के माध्यम से चयन किया गया है जिनकी कुल संख्या 43 है जो शोध पत्र की इकाईयाँ हैं। तथ्यों के एकत्रीकरण के लिये प्राथमिक तथ्य के रूप में स्व–निर्मित साक्षात्कार अनुसूची तथा द्वैतीयक तथ्यों के रूप में संबंधित पुस्तकें, शोध साहित्य, इंटरनेट व कार्यालयी अभिलेखों को आधार बनाया गया है। चयनित युवा 18– 25 आयु वर्ग के बीच हैं।

वर्तमान समय परिवर्तन की क्रांतियों का युग है जो समयानुसार आवश्यक और अपेक्षित भी है। वर्तमान में परंपरागत मूल्य विघटित होते जा रहे हैं और उनके स्थान पर नवीन सामाजिक मूल्य स्थापित हो रहे हैं। युवाओं में स्वयं को औरों से भिन्न दिखलाने, स्वयं की पहचान बनाने और स्वयं को महत्वपूर्ण समझे जाने का गुण विद्यमान होता है। यही कारण है कि नवीन सामाजिक मूल्यों का सर्वाधिक प्रभाव इन्हीं युवाओं में देखा जाता है। सबसे पहले जानने का प्रयास किया गया कि क्या परंपरागत मूल्य विघटित हो रहे हैं, तथ्य निम्नवत् पाये गयेः

परंपरागत मूल्य विघटित हो रहे हैं संबंधी प्रत्युत्तर (सारणी संख्या–1)

प्रत्युत्तर स्वरुप	आवृत्ति	आवृत्ति प्रतिशत
हाँ	27	62.79
नहीं	03	06.98
पता नहीं	13	30.23
योग	43	100

उपरोक्त तथ्यों में अधिकांश युवाओं ने मूल्यों के विघटन होने को स्वीकार किया जिनका प्रतिशत 62.79 है। 6.98 प्रतिशत इसे अस्वीकार करते हैं जबकि 30.23 प्रतिशत ने अपना मत पता नहीं में दिया है।

युवाओं से यह भी जानने का प्रयास किया गया कि क्या परंपरागत मूल्य विकास को अवरुद्व करते हैं, तथ्यों का विवरण निम्नवत् पाया गयाः

परंपरागत मूल्य विकास को अवरूद्व करते हैं, संबंधी तथ्य (सारणी संख्या–2)

प्रत्युत्तर स्वरुप	आवृत्ति	आवृत्ति प्रतिशत
सहमत	22	51.16
असहमत	10	23.26
तटस्थ	11	25.58
योग	43	100

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर पाया गया कि ऐसे छात्रों का प्रतिशत सर्वाधिक(51.16) रहा जिनका मानना था कि वर्तमान समय में परंपरागत मूल्य विकास में बाधा डालते हैं। 23.26 प्रतिशत इससे असहमत तथा 25.58 प्रतिशत तटस्थता की स्थिति में पाये गये।प्राचीन कालीन व्यवस्थाओं के अनुसार श्रवण कुमार, एकलव्य जैसे उदाहरणों को आज किसी भी रुप में देखा जाना कल्पना मात्र है। प्रत्येक परिवार की अपेक्षाएं अपने बच्चों को संस्कारी बनाने की अवश्य होती है जिसके लिए उसी के अनुसार उनका समाजीकरण करने का प्रयास किया जाता है। लेकिन आधुनिकता की चाह में सांस्कृतिक मूल्य विघटित दिखायी पड़ते हैं। तथ्यों से निम्नवत् प्रतिक्रिया को स्पष्ट किया गया जिसमें अभिभावकों, शिक्षकों व अन्य बड़ों का अभिवादन व उनके तरीकों संबंधी आधारों को जानने का प्रयास किया गयाः

बड़ों का अभिवादन करने संबंधी तथ्य (सारणी संख्या–3)

प्रत्युत्तर स्वरुप	आवृत्ति	आवृत्ति प्रतिशत
प्रतिदिन	18	41.86
कभी–कभी	25	58.14
कभी नहीं	0	0
योग	43	100

शिक्षकों का अभिवादन करने संबंधी तथ्य (सारणी संख्या–4)

प्रत्युत्तर स्वरुप	आवृत्ति	आवृत्ति प्रतिशत
प्रतिदिन	25	58.14
कभी–कभी	18	48.86
कभी नहीं	0	0
योग	43	100

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

सारणी संख्या 2 से प्राप्त तथ्यों के आधार पर छात्राओं के 41.86 प्रतिशत ने प्रतिदिन अपने माता–पिता या बड़ों का सम्मान पैर छूकर करना स्पष्ट किया जबकि 58.14 इस प्रकार के सम्मान को विशेष अवसरों पर स्वीकार किया। इसी प्रकार सारणी संख्या 3 के अनुसारशिक्षकों से प्रतिदिन अभिवादन करने में छात्रों का प्रतिशत 58.14 और कभी–कभी अभिवादन करने का प्रतिशत 18.86 रहा।

विशेष–विद्यार्थियों का कहना था कि वे उन्हीं शिक्षकों का अभिवादन प्रतिदिन करते हैं जिन्हें वे(विद्यार्थी) व्यक्तिगत रूप से जानते हैं।औद्योगीकरण, नगरीकरण, पाश्चात्यीकरण आदि के प्रसार ने हमारी परंपरागत संयुक्त परिवार व्यवस्था को एकाकी परिवारों में परिवर्तित करने का कार्य तेजी से किया है। कुछ लोगों द्वारा इसे आज की आवश्यकता तो कुछ लोगों द्वारा इसे मजबूरी का नाम दिया जाता है। युवाओं से जानने का प्रयास किया गया कि उनकी इच्छा दोनों में से किस परिवार के निर्माण की है या रहेगी, तथ्य निम्नवत् पाये गये:

पारिवारिक स्वरूप को चुनने संबंधी युवाओं के प्रत्युत्तर
सारणी संख्या–5

प्रत्युत्तर स्वरुप	आवृत्ति	आवृत्ति प्रतिशत
संयुक्त परिवार	24	55.81
एकाकी परिवार	19	44.18
योग	43	100

प्राप्त तथ्यों में 55.81 प्रतिशत छात्रों ने संयुक्त परिवार को चुनना पसंद किया।वहीं 44.14 प्रतिशत छात्रों ने भविष्य में एकाकी परिवारके निर्माण को प्रथमिकता दिया।

वर्तमान समय में अंतर्जातीय/अंतर्धर्मीय या स्वयं के पसंद के विवाह को विवाह के सरलीकरण के रुप में परिभाषित किया जा रहा है और इस ओर युवकों को सर्वाधिक रूप से प्रभावित होते हुए भी देखा जा रहा है। अतः उक्त विषय में युवाओं की प्रतिक्रिया को जानने का प्रयास किया गया कि क्या वे ऐसे विवाह को उचित मानते हैं और अगर उचित मानते हैं तो क्या वे भविष्य में उक्त विवाह को अपनाएंगे,तथ्य निम्नवत् पाया गया:

अंतर्जातीय/अंतर्धर्मीय विवाह को उचित मानने संबंधित तथ्य
सारणी संख्या–6

प्रत्युत्तर स्वरुप	आवृत्ति	आवृत्ति प्रतिशत
उचित	10	23.26
अनुचित	13	30.23
तटस्थ	20	46.51
योग	43	100

स्वयं द्वारा अंतर्जातीय/अंतर्धर्मीय विवाह को अपनाने संबधी तथ्य
सारणी संख्या–6.1

प्रत्युत्तर स्वरुप	**आवृत्ति**	**आवृत्ति प्रतिशत**
हाँ	3	30
नहीं	1	10
कह नहीं सकते	6	60
योग	10	100

उपरोक्त सारणी संख्या 5 के अनुसार 23.26, 30.23 एवं 46.51 प्रतिशत युवाओं ने अंतर्जातीय/अंतर्धर्मीय विवाह को क्रमशः उचित, अनुचित व तटस्थ के रुप में स्वीकार किया। अंतर्जातीय/अंतधर्मीय विवाह को उचित मानने वाले छात्रों से जानने का प्रयास किया गया कि क्या वे भविष्य में इस प्रकार का विवाह करना पसंद करेंगे, तो उचित मानने वाले छात्रों की 30 प्रतिशत इकाई ने अपनी सहमति प्रदान की। वहीं 60 प्रतिशत छात्र ऐसे रहे जिन्होंने इस विषय में वर्तमान में कुछ भी कहने में अपनी असमर्थता व्यक्त की और विकल्प के रुप में 'कह नहीं सकते' का चयन किया। 10 प्रतिशत छात्रों ने इस प्रकार के विवाह को अपनाने में अपनी असमर्थता व्यक्त की। उपरोक्त तथ्यों को सारणी संख्या 6.1 के माध्यम से दर्शाया गया है।

वर्तमान में लिव–इन–रिलेशनशिप एक नवीन संस्कृति के रुप में सामने आया है। कुछ लोगों की दृष्टि में यह उचित तो कुछ इसे अनुचित मानते हैं और कुछ इसे सांस्कृतिक मूल्यों के विपरीत मानते हैं, कुमाऊँ में इसकी गति अत्यधिक मंद है। जानने का प्रयास किया गया कि क्या वे लिव इन रिलेशनशिप को उचित मानते हैं, तथ्य निम्नवत् पाये गये:

लिव इन रिलेशनशिप संबंधी युवा प्रतिक्रिया (सारणी संख्या–7)

प्रत्युत्तर स्वरुप	आवृत्ति	आवृत्ति प्रतिशत
उचित	7	16.28
अनुचित	20	46.51
तटस्थ	16	37.21
योग	43	100

छात्रों के 46.51 प्रतिशत ने लिव इन रिलेशनशिप को अस्वीकार किया जबकि 16.28 प्रतिशत छात्रों ने इसे इस आशय से स्वीकार किया कि इसमें नियमों का पालन और माता–पिता/परिवारजनों स्वीकृति आवश्यक है। वहीं 37.21 प्रतिशत छात्र ऐसे रहे जिन्होंने इस संबंध में कुछ भी कहने में अपनी असमर्थता व्यक्त की और विकल्प के रुप में 'तटस्थ' का चयन किया। उपरोक्त तथ्यों को सारणी संख्या 7 के माध्यम से दर्शाया गया है।

औद्योगीकरण, नगरीकरण, आधुनिकता और विशेषकर मीडिया ने युवाओं की सोच में परिवर्तन लाने का कार्य किया है। जैसे–जैसे युवा आधुनिकता की ओर बढ़ रहे हैं उनमें धार्मिक आस्था के प्रति उदासीनता का भाव परिलक्षित हो रहा है। उक्त संबध में

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

छात्रों से धार्मिक क्रियाकलापों यथा व्रत/रखने तथा व्रत रखने के पीछे उद्देश्यों को जानने का प्रयास किया गया, तथ्य निम्नवत् पाये गए:

व्रत/उपवास रखने संबंधी तथ्य

सारणी संख्या–7

प्रत्युत्तर स्वरुप	आवृत्ति	आवृत्ति प्रतिशत
हाँ	8	18.60
नहीं	21	48.84
विशेष अवसरों पर	14	32.56
योग	43	100

व्रत/उपवास रखने के उद्देश्य संबंधी तथ्य

सारणी संख्या–7.1

प्रत्युत्तर स्वरुप	आवृत्ति	आवृत्ति प्रतिशत
ईश्वरीय आस्था	10	45.45
पारिवारिक दबाव	9	40.91
स्वास्थ्य हेतु	3	13.64
योग	22	100

प्राप्त आँकड़ों के अनुसार केवल 18.60 प्रतिशत छात्रों ने व्रत/उपवास रखने की बात स्वीकार की। छात्रों के 32.56 प्रतिशत छात्रों विशेष अवसरों पर व्रत रखने की बात कही। वहीं 48.84 प्रतिशत छात्रों ने व्रत/उपवास रखने को मना किया जिन्हें सारणी संख्या 7 के माध्यम से दर्शाया गया है। व्रत/उपवास रखने की स्वीकारोक्ति देने वाले छात्रों के 45.45 प्रतिशत ने ईश्वरीय आस्था, 40. 91 प्रतिशत ने पारिवारिक दबाव व 13.64 प्रतिशत ने स्वास्थ्य हेतु व्रत रखने के उद्देश्यों की बात कही।

वर्तमान में भारत देश आधुनिकीकरण की दिशा में आगे बढ़ रहा है जिनमें युवाओं का सर्वाधिक योगदान है। इसका कारण युवाओं में वैज्ञानिक सोच का विकास और तर्क करने की सामर्थ्य है। एक तरफ युवाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण व तर्कशक्ति का विकास हुआ है, वहीं दूसरी ओर उनका अंधविश्वास में आस्था समाप्त हो रही है। उक्त संबंध में जानने का प्रयास किया गया कि क्या वे जादू–टोना/प्राकृतिक शक्तियों में विश्वास करते हैं, तथ्य निम्नवत् पाये गए–

जादू–टोने/प्राकृतिक शक्तियों में विश्वास करने संबंधी तथ्य

सारणी संख्या–8

प्रत्युत्तर स्वरुप	आवृत्ति	आवृत्ति प्रतिशत
हाँ	0	0
नहीं	35	81.39
थोड़ा बहुत	8	18.61
योग	43	100

प्राप्त तथ्यों में 81.39 प्रतिशत छात्रों ने जादू–टोने/प्राकृतिक शक्तियों में विश्वास करने को पूर्णतया नकारा। केवल 18.61 प्रतिशत छात्र ऐसे रहे जिन्होंने थोड़ा बहुत विश्वास करने की बात कही।

निष्कर्ष– निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि विभिन्न कारणों से कम या ज्यादा मात्रा में प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रुप से युवाओं में मूल्यों का विघटन देखा जा रहा है। आधुनिक बनाने की चाह, बढ़ते नशे का प्रचलन तथा मीडिया का प्रभाव उन्हें अपनी आगोश में जकड़े हुए हैं जिसने पारिवारिक ताने–बाने में बिखराव कर युवाओं को स्वतंत्र बनने की चाह के लिए मजबूर किया है। परिवारों में न कर्ता और न ही शिक्षण संस्थाओं में शिक्षकों का नियंत्रण उन्हें स्वीकार्य है। मूल्यों का टकराव पीढ़ीयों के अंतराल को और अधिक बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं। परिवार से दूरी, धार्मिक आस्थाओं में कमी, परंपरागत मूल्यों में बिखराव आदि समस्त वर्तमान घटनाएं स्पष्ट करती हैं किआधुनिक मूल्य तीव्रता से परंपरागत मूल्योंपर हावी होते जा रहे हैं जिसका सर्वाधिक प्रभाव युवाओं पर देखा जा रहा है जैसा कि शोधपत्र में प्राप्त तथ्यों के आधार पर स्पष्ट हुआ है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. सिंह, जे0 पी0, समाजशास्त्रः अवधारणाएं एवं सिद्वांत, प्रेंटिस हॉल ऑफ इण्डिया प्रा0 लि0, नई दिल्ली, 2002, पृ0 131–132
2. Johnson, Harry m. Sociology: A Systematic Introduction, Applied Publishers Pvt. Ltd. 1960. P. 15
3. सिंह, गुरुदेव, The Impact of Modernization on Family and Social Structure in India, सहारा पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1995
4. श्रीनिवास, एम०एन०] Scoial Change in Modern India, बर्कले : यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस
5. Kalamani, M. A., Study of Problems of adolescents and their value system (Unpublished, Doctoral Thesis) Mdaurai Kamaraj University, 1991
6. Singh, K. A., Diminishing of Moaral Values Among Indian Youth, International Journal of Research Culture Society, 2020

*****